WAKAT KI ULJHAN

Kavi Ke Kalam Se Dilki Gaharise Man
Me Kuch Asliye

RAJU KUMAR

BlueRose ONE.com DIY
Stories Matter

© Raju kumar 2023

All rights reserved by the author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of the information contained within.

Title: WAKAT KI ULJHAN volume 2
Language: Hindi
Character set encoding: UTF-8

First published by

BlueRose ONE.com DIY
Stories Matter

An Imprint of BlueRose Publishers

Head Office: B-6, 2nd Floor,
ABL Workspaces, Block B, Sector 4,
Noida, Uttar Pradesh 201301
M: +91-8882 898 898

BlueRose ONE .com DIY
Stories Matter

DEDICATION

<u>पिता की प्रेरणा माता की समवेदना</u>

कवि एक साधरण मद्धयमं वर्ग परिवार से तालकु रखत े है ।अपनी माता को याद कर ◌ के जो की अभी जीवित नही है |रोने लगे उनकी माता को नाम बिध्या था बोलने लगे मा अपनी नाम को सार्थक करो और सर्रस्वती माता को याद कि ये। जिसके बाद उनको कबिता लिखने की प्रेरणा मिली। अभी वे साधारण सी नि जी कंपनि मे छोटेसे पद पर कार्यरत है |

ACKNOWLEDGEMENTS

मैं अपने माता – पिता का भी हार्दिक धन्यबाद करना चाहूंगा क्यूंकि उनकी सहायता बिना ये कभी भी सफल नहीं हो पाता। अंत में, मैं अपने प्यारे परिवार\ दोस्तों को धन्यवाद देना चाहूंगा जो पहले दिन से मेरे साथ हैं |

इस कविता का माद्यम केवल लोंगो को अपने परवेश से अवगत करना कविता के माद्यम से लोंगो को जीवन से सिख उसके प्रति प्रेम प्रकट करना , जीवन को उन्नती तरफ प्रशस्त करना है | हम किसी भी तरिके से किसी की जाति , धर्म, वर्ग की ठेस नहीं पहुन्चना चाहते हैं | अगर कविता किसी भी वाक्य या पंक्ति किसी से मिलता जुलता है तो ये संयोग है | ये कविता किसी की प्रतिलिपि नहीं है , मै उन कवियों को तहेदिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हुँ जिसे पढ़कर मै कविता लिखने का भाव उत्पन्न हुओ तथा पिता की प्रेरणा से और मा की याद मे समवेदना मे मै ने ये कविता लिखी है , इसमे किसी प्रकार के त्रुटी हो तो मुझे माफ करे और आगे मै सुधार करने की कोशिश करुंगा | सभी बडों गुरुजनों को प्रणाम |

प्रेरक कवि मैथिली शरण गुप्त , कुमार विश्वास, दिनकर ईत्यादी का मै आभारी हुँ की जीवन मे उनसे प्रेरणादायक कविता लिखने को मिला |

FOREWORD

Raju kumar
RIVER GANGA AT PATNA

PREFACE

PROLOGUE

सूचना

इस कविता का किसी भी तरह से छापना या कोई प्रतीलिपि लेना बिना सम्पादक के अनुमती के वीना अपराध माना जायगा इस ◌मे सलिप्त किसी भी ब्यक्ति को पाय जाने पर इसके खिलाफ कारवाई की जा सक्ति है,कवि एक साधरण मद्ध्यमं वर्ग परिवार से तालकु रखत ◌ है ।अपनी माता को याद कर ◌ के जो की अभी जीवित नही है रोने लगे उनकी माता को नाम बि ध्या था बोलने लगे मा अपनी नाम को सार्थक करो और सरस्वती माता कोयाद किये। जिसके बाद उनको कबिता लिखने की प्रेरणा मिली। अभी वे साधारण सी निजी कंपनि यों मे छोटे से पद पर कार्यरत है।

CONTENTS

COPYRIGHT DECLARATION	II
DEDICATION	V
ACKNOWLEDGEMENTS	VII
FOREWORD	IX
PREFACE	XII
PROLOGUE	XIV
CHAPTER 1 *पहेली*	*21*
CHAPTER 2 *गुब्बारे*	*23*
CHAPTER 3 *कस्मकस है जिन्दगी*	*25* *0*
CHAPTER 4 *बिचारों का असमंजस*	*27* *0*
CHAPTER 5 *वो आत्मा ही क्या जो वश मे न हो*	*29*
CHAPTER 6 *सडक*	*31*
CHAPTER 7 *माटी*	*33*

झरोखा *35*

CHAPTER 9
माँ *37*

CHAPTER 10
जिन्दगी *39*

CHAPTER 11
मन *41*

CHAPTER 12
पिता *43*

CHAPTER 13
चाय की चुस्की *45*

CHAPTER 14
बाती, नाव, बुन्द *47*

CHAPTER 15
धरती करे गुहार *49*

CHAPTER 16
आई पी एल *51*

CHAPTER 17
रास्ते का मुसाफिर हूँ *53*

1. पहेली

पहेली बिन कही सहेली।

कुछ हठिली कुछ रंगिली।

कुछ गमगीन कुछ निराली॥

कुछ अच्छी कुछ बुरी॥

कुछ जीवीत कुछ मरी सी॥

कुछ ज्ञान कुछ अज्ञान की॥

कुछ आधार कुछ निराधार॥

कुछ मिठी कुछ रसीली॥

कुछ बुनियादी कुछ चुनिन्दा॥

कुछ मुस्काती कुछ इठलाती॥ ॥

2. गुब्बारे

गुब्बारे खुशियों के फब्बारे |

सात रंग के सहारे गुब्बारे ||

हंसते गुन गुनाते गुब्बारे |

रंग बिरंगी गुब्बारे, मुस्काते गुब्बारे||

त्योहारों को सजोते , मनाते गुब्बारे |,

कुछ फुले कुछ अनफुले, गुब्बारे,||

गुद गुदाते गुब्बारे |

झुन,- झुनाते गुब्बारे ||

संदेश लाते- लेजाते गुब्बारे |

दुनियाँको आइना दिखाते गुब्बारे ||

खुशियों को संजोय , गुब्बारे| कुछ मन मे बोय गुब्बारे ||

3. कस्मकस है जिन्दगी

कस्मकस है जिन्दगी, एक रस्म है ,जिन्दगी |

हमें चाहिए बन्दगी ,कस्मकस है जिन्दगी रिति-रिवाज ||

और जशन है जिन्दगी ,कोशिश, आशा, उमीद, जीत और हार है जिन्दगी |

वेवाक है जिन्दगी, एक माया, घनासाया है जिन्दगी ||

धुप और छाँव है जिन्दगी |

उँची पतंग की डोर है जिन्दगी, खिंची किसी और है, जिन्दगी ||

खरपतवार है जिन्दगी, मिठी वयार है जिन्दगी |

मिठी मुस्कान है जिन्दगी, उँची उडान है जिन्दगी ||

कस्मकस है जिन्दगी , परमार्थ है जिन्दगी |

कोरा कागज है , सागर है जिन्दगी, तो कभी बारिश की बुँद है

जिन्दगी||

खूली किताब है जिन्दगी,किसी क तकदीर है जिन्दगी|

एक आइना है जिन्दगी,एक परिन्दा है जिन्दगी||

कुछ चुनिन्दा है जिन्दगी,कभी करती प्रसन्नता तो ,कभी निन्दा है जिन्दगी|

कभी हुष्ट पुष्ट तो ,कभी कमजोर है जिन्दगी||

कभी दीया तो , कभी बाती है जिन्दगी|

कभी भूली- विसरी याद दिलाती जिन्दगी||

कभी अखियो को मिचती जिन्दगी,कभी सिंचती जिन्दगी|

कस्मकस है जिन्दगी, बडी बेवस है जिन्दगी||

4. बिचारों का असमंजस

बिचारों का असमंजस , छाया चारों ओर है |

लोग खुद के अधिन है, समस्या गम्भीर है ||

मै का अहम भरा भरपूर है, लोग मजबुर है |

बिचार संकूर्ण है, मन मे द्दढ है |

लोग सराबोर है, अंसाती चारों ओर है |

मन मे कुण्ठा भरपुर है |

लोग क्यों मजबूत है, मै क्यों कमजोर हुँ |

सकल से अकल से दिल से दिमाग से , पैसे से या घरवार से |

अब न चौक न चौबारे है, न वो गलियाँ है न, न वो फबारे है |

कुछ खुद से लाचार तो, कुछ औरों से परेशान है |

बिचारों का असमन्जस छाया चारों ओर, किसी मे पैसे कि खुमारी,

किसी को प्रतिष्ठा कि पर भारी|

कोई मोह माया मे फसा है तो, कोई छालावा मे लगा है|

कोई भोग विलास मे लिप्त है तो , कोई मान –मर्यादा मे विरमित है|

समाज मे लोग गमगीन है हर तरफ , अराजकता और राजनैतिक माहौल है|

सत्ता लाचार है सरकार मौन है, छाया चारों तरफ अनिश्चितता का माहौल है|

जनता क टुट रही है कमर महंगाई का मार चारों ओर है|

बिचारों का असमजस छाया चारों ओर है , लोग खुद केअधिन है समया गभीर है|

5. वो आत्मा ही क्या जो वश मे न हो

वो आत्मा ही क्या जो वश मे न हो|

वो शरीर ही क्या जो यश मे न हो|

वो आँखे ही क्या जो सपन मे न हो|

वो चरण ही क्या जो स्पर्श मे न हो|

वो विचार ही क्या जो निराधार हो|

वो हाथ ही क्या जो परम मे न हो |

जो परमात्मा की ओर न उठे|

वो हृदय ही क्या जो करुणा मे न हो|

वो मस्तिस्क ही क्या जो ब्रह्म मे न हो|

वो वाणी ह क्या जिसमे मृदुल न हो|

वो अश्रुण ही क्या जो नम न हो|

वो मनुष्य ही क्या जिसमे आत्मगलानी न हो|

वो कणक ही क्या जिसमे श्रवण न हो|

वो नासिका ही क्या जिसमे वायु हीन हो|

वो जवानी ही क्या जिसमे रवानी न हो|

वो फुल ही क्या जिसमे सुगन्ध न हो|

वो उपवन ही क्या जहा फुल न हो|

वो वादल ही क्या जिसमे गर्जन न हो|

वो सावाँ ही क्या जिसमे वारिश न हो|

6. सडक

सडक किस ओर तुम जाते हो , हर मोड पर तुम मिल जाते हो |

रुकने की सोचता हुन्, किस ओर तुम जाते हो , हर चौक – चौराहे पर तुम मुझसे टकराते हो ||

सडक तुम किस ओर जाते हो, हर कोई है मुसाफिर तेरा हर राह्गीर तेरा थिकाना है |

सडक तुम किस ओर जाते हो, रुक जा, थम जा, ठहर जा है दुर तलक तुम को जाना ना कोई मन्जिल है न ठीकाना ||

किस ओर तुम जाते हो , कहीं पसरा सन्नाटा तो कहीं भिड भड़ाका |

किस ओर तुम जाते हो , कहीं है रैन वसेरा कहीं नुक्कड़ का झमेला ||

सडक तुम किस ओर जाते हो, कहीं पगडण्डीयों का किनाज़ा तो , नदियां का आना जाना |

सडक तुम किस ओर जाते हो, हर मोड पर तुम मिल जाते हो ||

7. माटी

माटी तेरे कितने रुप बदले कितने स्वरूप |

माटी तेरे कितने रुप, माटी जुरे तो घर बन जाए ||

रहने को तुम काम आये |

माटी तेरे कितने रुप बदले कितने स्वरूप ||

कुम्हार तेरा घडा बनाए , जिससे सब कि प्यास बुझआए |

माटी तेरे कितने रुप बदले कितने स्वरूप ||

माटी से कुलिया – चुकिया है बनती , जिससे बच्चे है खेलते |

माटी के पहचान तुम से है बनती ||

बनती तुमसे दिपक जिसमे जलती तेल और बाती |

भगाए अन्धकार को और उजालों को तुम करिब लाती ||

माटी तेरे कितने रुप बदले कितने स्वरूप |

घोडे हाथी तुमसे है बनते, जो ब्याह मे है रखते||

दुल्हन दुल्हे के घर है जाते, रश्म के वो काम आते|

घन्टी तुमसे है बनते, मन्दिर मे तो हो टगते||

माटी तेरे कितने रुप बदले कितने स्वरूप|

मुर्ति देवी देवताओं के है, बनते सारा जहा जिसमे है पूजते||

रंग भरे उसमे शिल्पकार, लोग देखे उसको निहार|

भगवान जैसे है साक्षात् पधार||

माटी तेरे कितने रुप बदले कितने स्वरूप|

तुमसे कुल्हड है बनते, जिसमे लोग चाय और पानी पीते||

पर्यावरण को देती सुधार, पन्नी को तुम करती निराधार|

बच्चे, बुढे और माली बजाए तुमको देखकर ताली|| हम पर तेरा कितना उपकार, निश्छल, निरनतर, निराकार|

8. झरोखा

कभी सच्चाई हुँ तो कभी मै हुँ धोखा।

कभी रिमझिम बारिश कभी किसी कि गुजारिश॥

कभी गहरी सोंच मे डूबा कभी रंग रुप है अनुठा।

कभी किसी कि याद मे डूबा हुँ, कभी रंग बिरंगी पर्दों मे झुमा हुँ॥

कभी किसी कि परछाई हुँ कभी हकिकत।

कभी गर्मी हवाओं का थपेडा कभी ठण्डी हवाओं का बसेरा॥

कभी कोयल का कुक है तो कभी चिडियों का चचहाहट।

कभी सोर सराबा है कभी पसरा सन्नाटा॥

कभी मुस्कुराहट हुँ तो कभी किसी के गमों का साया।

कभी चहल कदमी हजारों है, कभी छ्या सन्नाटा है॥

झरोखा हमेशा याद आता है, कभी किसि का याद दिलाता है।

कभी गुन गुनाता कभी शर्माता।।

कभी उठी नजरें कभी झुकी पलकें।

कभी नजर का मिलना कभी शर्माना।।

9. माँ

माँ तेरी मुश्कान कितनी प्यारी है

माँ तेरी कदमों मे दुनिया सारी है|

माँ तेरी गोद मे दुनिया सारी है

माँ तेरी आँखों मे उम्मिद कि प्याली है|

माँ तेरी कानों मे आहट हमारी है

माँ तेरी पलको मे मैने जीवन निसारी है|

माँ तेरी पल्लु मे बचपन गुजारी है

माँ तेरी होठों पे लोरी हमारी है|

माँ तेरी चाहत मे यादें बिसारी है

माँ तुम कितनी प्यारी है|

10. जिन्दगी

तार-तार है जिन्दगी जार –जार है |

जिन्दगी कभी नदि का किनारा तो कभी मंजधार हैं |

जिन्दगी कभी बदहाल तो कभी खुसहाल हैं |

जिनगी कभी उमंग तो कभी तरंग है |

जिन्दगी कभी सहारा हैं तो कभी बेसहारा हैं |

जिन्दगी कभी धूप हैं तो कभी छाव हैं |

जिन्दगी कभी शहर तो कभी गांव है |

जिन्दगी कभी नाव तो कभी पटवार है |

जिन्दगी कभी बगिचा तो कभी गलिचा है |

जिन्दगी कभी नदी तो कभी झरना है ||

जिन्दगी कभी बचपन तो कभी बुढापा है |

जिन्दगी कभी खामोश तो कभी चंचल है||

जिन्दगी कभी स्वर्ग तो कभी नरक है|

जिन्दगी कभी कभी अपनी तो कभी बेगानी है||

जिन्दगी कभी गीत तो कभी संगीत है|

जिन्दगी कभी भिड तो कभी अकेली है||

जिन्दगी कभी अम्बर तो कभी जमिं है|

जिन्दगी कभी आँशु तो कभी खुशी है||

जिन्दगी कभी स्याही है तो कभी लिखावट है|

जिन्दगी कभी सच्ची तो कभी वनावट है||

11. मन

मन क्यों इतना अशान्त है|

मन क्यों इतना विरांत है||

कहने को तो कुछ भी नहीं|

फिर भी मन क्यों इतना अशान्त है||

दिल भी बेचारा परेशान है|

मन क्यों इतना अशान्त है||

मन कुण्ठित है परेशान है|

मन क्यों इतना अशान्त है||

मन क्यों इतना विरांत है|

मन मे जिज्ञासा भरि हुई|

उँची उडान भरि हुई||

क्यों आँखो की निंद ऊडी हुई|

मन क्यों इतना अशान्त है ||

मन क्यों इतना विरांत है |

क्यों है जिम्मेदारी से घिरि हुई ||

क्यों है समय से डरी हुई |

क्यों मन मे वस ये फितुर है , क्यों ये दुनिया के कर्म मे मशगुल है |

क्यों ये बढति उमर का छलावा है |

या फिर कुछ पल का दिखावा है |

मन क्यों इतना अशान्त है ||

मन क्यों इतना विरांत है |

12. पिता

पिता प्यारा दिल का अरमान है|

भर्ता खुशियों का उडान है||

पिता परिवार का पहचान|

आन बान और शान है||

पिता घर का मुखिया है|

पिता दिलाता हर खुशियाँ||

पिता जिम्मेदारी है|

पिता उम्मिदों पर पडता भारी है||

पिता से पुरी होती हर फरमांइस\मंशा है |

पिता से पुरी होती हर ख्वाहिश है||

पिता नारियल कि तारह बाहर से सख्त और आंतरिक/भीतर से नरम है|

पिता गुसेल है ये बच्चों का भ्रम है||

पिता बच्चों का आस है, उनकी हर बात खास है|

पिता जैसा न कोई दुजा, जिसकी हम करे पुजा||

उनको चरनों मे सत सत प्रणाम है|

पिता खुशियों कि दुकान है,|| पिता बातों का पुलिन्दा है ,|

पर उनकी बाते चुनिन्दा है||

पिता कि पैर मे दुनियाँ सारी|

उनपर हमारी खुशियाँ वारी है||

पिता जैसा कोई संसार मे न भगवान|

पिता बनाए हमारी दुनियाँ महान||

13. चाय की चुस्की

सुबह जब हम सोकर उठे , चाहिए चाय की चुस्की|

थक कर जब हम काम से आए, तो चाहिए चाय कि चुस्की|

जब हमारे यहाँ पडोशी आए तो चाहिए चाय कि चुस्की|

जब मेहमान आए तो चाहिए चाय कि चुस्की|

जब शिक्षक पढ़ाने आए तो चाहिए चाय कि चुस्की|

जब देश-दुनिया कि लेना हो जानकारी चाहिए चाय कि चुस्की|

हो कोई पर्व या त्योहार तो चाहिए चाय कि चुस्की|

क्यों कि चाय से है मिटती थकान और सुस्ती ,

इसिलिए तो चाहिए चाय कि चुस्की|

14. बाती, नाव, बुन्द

ज्ञान दिप का दे दो प्रभु मै बाती बनकर चल जाउँ,

दुर भगाउँ अंधियारा उजियारा मै कहलाउँ|

ज्ञान तख्त को दे दो प्रभु मैन नाव बनकर चल जाउँ,

नाविक बन मै दरिया पार करा जाउँ|

वेग हावा का दे दो प्रभु, मै डुबते तिनके को किनारा पहुंचाऊं
|

ज्ञान बुन्द दे दो प्रभु मै बादल बन बर्ष जाऊँ,

दुर भगाऊँ गर्मी (उष्ण) को ठंडक बन बनके वस जाऊँ|

वेग हावा का दे दो प्रभु मै प्राण किसी का बन जाऊँ,

धड्कु सब के हृदय मे मैं प्रभु हृदय मे वस जाऊँ|

ज्ञान वाणी का दे दो प्रभु, प्रवचन मैं सबको सुनाऊँ,

प्रभु के चरण कमलों मे शिश सदा मै नवाऊ |

ज्ञान ज्योती का दे दो प्रभु , सदा नजरों मे उसे मै पाऊँ

सदा मन कि आन्खों मे मैं तुमको बसाऊँ |

15. धरती करे गुहार

धरती करे गुहार बार-बार पुकार।

मत काटो पेड पौधे दे दो मुझे मेरी जीवन उधार॥

धरती करे गुहार बार-बार पुकार।

सुरज मुझे सताता है, बारिश मुझे तरसाता है ॥

भूकम्प मुझे डराता है।

जीवन मुझसे दुर जाता है, जीव और जन्तु मुझसे दुर॥

मै बिन जल हो रही सिचाई से दुर।

धरती करे गुहार बार-बार पुकार॥

पहाड हो रहे मरूस्थल, हर जगह हो रह उथल पुथल।

प्राणी नहीं समझ रहे आवस्था केवल बना रहे रास्ता॥

पेड है जरुरि अभि जीवन जीना है पूरी।

पेड पौधा हो रहे लुप्त , जीव जन्तु हो विलुप्त||

धरती रो रहे फुट फुट के |

धरती कर रही गुहार बार-बार पुकार ||

नदियों मे बिष तुम फैला रहे जल प्राणी को तुम मार रहे |

16. आई पी एल

आई पी एल है कैसा ये लिग लोगों को कर रहा ये किल|

लोग आई पी एल ड्रिम आउदै र मे पैसे है लगा रहे||

पैसे के लालच मे पैसे गवा रहे|

समय जैसे थम जाता है ||

आई पी एल का एस्ट्रोलोजी किसि को समझ नहीं आता है|

वैठ–वैठ थक जाते है पर और कोई काम नहीं कर पाते है||

उठ्ने को करे न मन जब बनने लागे रनं|

सिंगल कोई नहीं लेते बस चौका या छक्का लेते है||

ये देख सब है हकका बक्का|

17. रास्ते का मुसाफिर हूँ

रास्ते का मुसाफिर हूँ चलना मुझे आता है |

न मन्जिल का पता है न मोड का ठिकाना ||

रास्ते का मुसाफिर हूँ चलना मुझे आता है |

न धूप की परवाह मुझे न अधेरों का छलावा है ||

रास्ते का मुसाफिर हूँ चलना मुझे आता है |

बारिश मुझे रोक नही सक्ति बिजली मुझे टोक नही सक्ति है ||

रास्ते का मुसाफिर हूँ चलना मुझे आता है |

न वक्त की परवाह मुझे न उम्र क तकादा है ||

रास्ते का मुसाफिर हूँ चलना मुझे आता है |

सर्दी मुझे झुका नही सकती, हावा मुझे झाकोर नही सकती ||